Vedanta Demerger के बाद बदलेगा खेल! एल्युमिनियम बिजनेस बनेगा 'फ्यूचर का गोल्ड', बढ़ेगी वेदांता की वैल्यू?

hindi.economictimes.com/markets/share-bazaar/vedanta-demerger-vedanta-aluminium-demerger-unlock-massive-valuation-demand-green-metal-surges-vedanta-share-price/articleshow/125882016.cms

By December 10, 2025

वेदांता लिमिटेड (Vedanta Ltd.) के डिमर्जर की प्रक्रिया जैसे-जैसे आगे बढ़ रही है, बाजार और उद्योग जगत का ध्यान सबसे ज्यादा इसके एल्युमिनियम कारोबार पर केंद्रित हो रहा है। डिमर्जर के बाद वेदांता का एल्युमिनियम बिजनेस एक स्वतंत्र कंपनी के रूप में नजर आएगा, जो प्रोडक्शन कैपेसिटी, संसाधनों और बाजार हिस्सेदारी के मामले में भारत की सबसे बड़ी एल्युमिनियम कंपनी होगी। उद्योग विश्लेषकों के अनुसार, एल्युमिनियम को आने वाले वर्षों में 'ग्रीन मेटल' और 'भविष्य का गोल्ड' कहा जा रहा है। भारत की मेटल रणनीति में एल्युमिनियम अचानक सबसे गंभीर धातु क्यों बन गया है? चलिए, इसका जवाब जानते हैं।

भविष्य की धातु

एल्यूमिनियम का इस्तेमाल इंफ्रास्ट्रक्चर, ऑटो, पैकेजिंग और ऊर्जा सेक्टरों में लगातार बढ़ रहा है। इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और तेजी से बढ़ते इंफ्रास्ट्रक्चर चक्र के बीच एल्युमिनियम को अब सिर्फ बेस मेटल नहीं, बल्कि 'अगले 25 सालों की अनिवार्य धातु माना जा रहा है। इस ट्रेंड में वेदांता एल्युमिनियम की स्थिति पहले से ही अग्रणी है। वेदांता, जिसने पिछले एक दशक में बॉक्साइट से बिलेट तक की पूरी वैल्यू-चेन इंटीग्रेशन पर अरबों डॉलर लगाए हैं, आज भारत की आधी एल्युमिनियम जरूरत अकेले पूरी करती है।

डिमर्जर के बाद यह कंपनी पहली बार स्वतंत्र रूप से मार्केट में खड़ी होगी। यह एक ऐसी यूनिट के रूप उभरेगा जिसके पास सबसे बड़ी उत्पादन क्षमता होगी। इसके अलावा कंपनी के पास लागत, टेक्नोलॉजी, वैल्यू-एडेड उत्पादों और पावर सिक्योरिटी में एडवांटेज भी है।

वेदांता का सप्लाई चेन

कोटक इक्विटी के विश्लेषक सुमंगल नेवेटिया बताते हैं कि वेदांता के कुल कारोबार में एल्युमिनियम और पावर बिजनेस की हिस्सेदारी लगभग 55 प्रतिशत है। यही कंपनी के बिजनेस की रीढ़ है। वेदांता ने बॉक्साइट खनन से लेकर कोयला माइनिंग, कैप्टिव पावर प्लांट, एल्यूमिना रिफाइनिंग और स्मेल्टिंग से लेकर वैल्यू-एडेड एल्युमिनियम प्रोडक्ट्स तक पूरी एकीकृत चेन तैयार कर ली है। यही इंटीग्रेशन कंपनी को कम लागत वाला, उच्च क्षमता वाला और ज्यादा प्रतिस्पर्धी उत्पादक बनाता है। भारत में एल्युमिनियम की मांग लगभग 5 मिलियन टन प्रतिवर्ष है, जिसमें से लगभग आधा उत्पादन वेदांता की विभिन्न यूनिट्स से आता है। यही कंपनी को देश की सबसे महत्वपूर्ण धातु कंपनियों में शामिल करता है।

कंपनी की प्रमुख उत्पादन सुविधाएं

झारसुगुड़ा स्मेल्टर (ओडिशा): दुनिया के सबसे बड़े इंटीग्रेटेड एल्युमिनियम स्मेल्टर परिसरों में से एकहै। इसमें अत्याधुनिक तकनीक और विशाल क्षमता मौजूद है। **लांजीगढ़ रिफाइनरी (ओडिशा):** बॉक्साइट को एल्यूमिना में परिवर्तित करने की मजबूत क्षमता, जो झारसुगुड़ा की स्मेल्टिंग जरूरतों का आधार है। **बाल्को (छत्तीसगढ़):** देश की एल्युमिनियम जरूरतों को पूरा करने में लंबे समय से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली यीनिट है। भारत में एल्युमिनियम की सालाना मांग 5 मिलियन टन है। अगले 10 सालों में यह दोगुनी हो सकती है। इसका कारण ऊर्जा, रिफाइनिंग, EVs, पैकेजिंग और रेलवे जैसे सेक्टर्स की तेज वृद्धि है। इस मांग का लगभग 50 प्रतिशत उत्पादन अकेले वेदांता की तीन प्रमुख यूनिट्स झारसुगुड़ा, लांजीगढ़ और BALCO से आता है। यह किसी भी भारतीय मेटल कंपनी के लिए बाजार असाधारण पकड़ कहलाएगी। झारसुगुड़ा स्मेल्टर दुनिया के सबसे बड़े इंटीग्रेटेड एल्युमिनियम परिसरों में शामिल है। वहीं लांजीगढ़ रिफाइनरी वेदांता के लिए वह 'कच्चा आधार' है, जहां बॉक्साइट को उच्च-ग्रेड एल्यूमिना में बदला जाता है।

कैप्टिव पावर प्लांट्स

एल्युमिनियम प्रोडक्शन एनर्जी पर अत्यधिक निर्भर रहता है। इस लागत को नियंत्रित करने के लिए वेदांता ने बड़े पैमाने पर कैप्टिव पावर प्लांट्स विकसित किए हैं, जिससे ऊर्जा सुरक्षा बनी रहती है और उत्पादन लागत कम रहती है। कंपनी हाल के सालों में कार्बन उत्सर्जन कम करने, नई तकनीक अपनाने और रिनियूएबल एनर्जी के इस्तेमाल को बढ़ाने पर भी काम कर रही है, जो इसे ग्लोबल एल्युमिनियम कंपनियों के बराबर खड़ा करता है।

भारत के विकास में एल्युमिनियम

भारत की विकास स्ट्रैटेजी में एल्युमिनियम वह मेटल है जिस पर आने वाले दो दशकों की पूरी औद्योगिक रीढ़ टिकी होगी, इन्फ्रास्ट्रक्चर विस्तार से लेकर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी, हाई-परफॉर्मेंस लॉजिस्टिक्स, और नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियों तक हर क्षेत्र में इसकी मांग कई गुना बढ़ने वाली है। इस बढ़ती जरूरत को पूरा करने की सबसे मजबूत क्षमता आज भारत में किसी

एक कंपनी के पास है तो वह वेदांता एल्युमिनियम ही है। डिमर्जर के साथ यह बिजनेस पहली बार एक स्वतंत्र, पूर्ण-फोकस्ड 'नेशनल मेटल चैंपियन' के रूप में सामने आएगा। इसके पास उत्पादन क्षमता, तकनीकी दक्षता, ऊर्जा सुरक्षा और माइनिंग इंटीग्रेशन का ऐसा संयोजन है जो भारतीय मेटल इंडस्ट्री में बेहद दुर्लभ है। यही वजह है कि विश्लेषकों का मानना है कि जैसे-जैसे भारत की एल्युमिनियम-चालित अर्थव्यवस्था गति पकड़ेगी, वेदांता एल्युमिनियम का वास्तविक मूल्य और भी खुलकर बाजार के सामने आएगा।

2047 के विकसित भारत लक्ष्य में एल्युमिनियम

उद्योग विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2047 तक भारत के विकसित देश बनने के लक्ष्य के चलते हल्की और टिकाऊ धातुओं की मांग कई गुना बढ़ेगी। एल्युमिनियम इसकी प्रमुख धातु होगी। क्योंकि, यह हल्का है, मजबूत है और 100 प्रतिशत रीसायक्लेबल है। यही वजह है कि वेदांता वैल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स के उत्पादन पर ध्यान बढ़ा रही है, जहां घरेलू और वैश्विक दोनों बाजारों में उच्च मांग है। 2047 के विकसित भारत लक्ष्य के संदर्भ में 100% रिसायकल होने वाली धातु एल्युमिनियम की मांग कई गुना बढ़ेगी। वेदांता इस मांग के उच्च-मार्जिन हिस्से पर फोकस कर रही है:

- वायर रॉड्स
- बिलेट्स
- लैमिनेशन-ग्रेड मेटल
- कंडक्टर-ग्रेड एल्युमिनियम

यही प्रोडक्ट्स EVs, बिजली के बुनियादी ढांचे, स्मार्ट सिटी, और हाई-वोल्टेज सिस्टम्स का आधार हैं। इस वैल्यू-एडेड हिस्से में तेजी से विस्तार वेदांता को सामान्य कमोडिटी उत्पादकों से अलग खड़ा करता है।

डिमर्जर के बाद बढ़ेगा वैल्यूएशन

डिमर्जर के बाद नई बनी एल्युमिनियम कंपनी एक pure-play metal कंपनी होगी, जिसका मूल्यांकन कई कारणों से बेहतर हो सकता है-

- बिजनेस और कैश फ्लो का पारदर्शी मॉडल
- लागत नियंत्रण और ऊर्जा दक्षता
- भारतीय बाजार में बढ़ती मांग
- वैल्यू-एडेड उत्पादों पर मजबूत पकड़

डिमर्जर वैल्युएशन अनलॉक का बड़ा मौका

डिमर्जर कंपनी के लिए वैल्यूएशन अनलॉक करने का एक बड़ा मौका माना जा रहा है, क्योंकि इससे बनने वाली नई एल्युमिनियम इकाई एक वैल्यु एडेड कंपनी के रूप में उभरेगी। यह संरचना निवेशकों के लिए न केवल अधिक पारदर्शी होगी, बल्कि इसके बिजनेस मॉडल, लागत संरचना और भविष्य की कमाई क्षमताओं का विश्लेषण भी कहीं अधिक आसान हो जाएगा। नई कंपनी का फोकस पूरी तरह एल्युमिनियम और पावर बिजनेस पर रहेगा, जहां लागत नियंत्रण और ऊर्जा सुरक्षा उसके स्थिर और मजबूत कैश फ्लो की सबसे बड़ी ताकत बनेंगे। कंपनी की उत्पादन क्षमता और घरेलू बाजार में हिस्सेदारी पहले से ही बेहद मजबूत है, और आने वाले दशक में भारत में एल्युमिनियम की बढ़ती मांग उसके विकास को और तेज कर सकती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि डिमर्जर के बाद शेयरधारकों को नई इकाई के शेयर सीधे मिलेंगे, जिससे वे भारत की उभरती एल्युमिनियम ग्रोथ स्टोरी का प्रत्यक्ष हिस्सा बन जाएंगे। डिमर्जर के बाद वेदांता का एल्युमिनियम कारोबार भारतीय धातु उद्योग में एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरने की स्थिति में है। विशाल उत्पादन क्षमता, इंटीग्रेटेड सप्लाई चेन, कम लागत वाला मॉडल और नई अर्थव्यवस्था की मांग, ये सभी तत्व इसे आने वाले वर्षों में सबसे महत्वपूर्ण एल्युमिनियम कंपनी बनाते हैं। भारत की नई विकास यात्रा में एल्युमिनियम की भूमिका जितनी बढ़ेगी, वेदांता एल्युमिनियम का मूल्य उतना ही अधिक उजागर होने वाला है।